परिशिष्ट

॥ श्रीमहावाणीजी ॥

सखिन बिच नृत्यत युगलकिशोर ॥

बिपिन प्रमोद सरोजा तट पर दिव्यभूमि चमकति चहुँओर।
चक्राकार रासमण्डल रचि, राग रागिनी के कल शोर ॥
चन्द्रकला विमलादि रंगीली, वीणा मृदंग लिये कर थोर।
चारुशीला सुभगा हेमा लिए, मुरली मुचंग किन्नरी जोर।
चन्द्रा चन्द्रवती मिलि गावति, क्षेमा स्वरहिं भरत रसबोर।
मदनकला करताल बजावत, सारंगी नन्दा टंकोर ॥
पिय शिर सुभग सुकीट विराजै, चन्द्रिका सीता के शिररोर।
चन्द्रहार प्यारी उर चमकत, पिय उर मोतिन माल उजोर ॥
कोटि कोटि रतिकाम विमोहन, नटवर वेष श्याम अरु गौर।
रूपमाधुरी कहिन परत हैं, अंग अंग छवि के उठत हिलोर ॥
कर से कर दोऊ मिलि धारे, नयनन शैन चलत दुहुँ ओर।
कबहूँ अधर रस पियत परस्पर, रस मतवारे दोउ चितचोर ॥
प्यारी हाव पियाचित करषत, पिय के भाव प्यारी निजओर
दोउ रस सिन्धु मगन रसलम्पट, अग्रअली नहिं चाहतभोर ॥

देखो सखि अति अनन्द रासरच्यो रामचन्द्र,
रजनी छबि छिटकि रही सरद चाँदनी ॥ १ ॥
बहु सखि मण्डलाकार नृत्यगान स्वर सँभार,
नृत्यत रघुनन्दन मिथिलेशनन्दनी ॥ २ ॥
कञ्चनमणि लसत भूमि नृत्यत पद चपल घूमि,
नूपुर छननन छमक छमक छन्दनी ॥ ३ ॥
कमला बिमलादितान रागा अनुरागादि गान,
करहिं राग रागिनी कला कलिन्दनी ॥ ४ ॥
चन्द्रकला वीणा मुचंग धुनि मृदंग मधुर,
अपर सखि सीतार तार तातरंगनी ॥ ५ ॥
ताधिग-धिग ताधिग-धिग, ताधिन्ता ताधिन्ता,
धिकिट धिकिट धिधिकट धिधिकट प्रवन्धनी ॥ ६ ॥
उघटत संगीत राग, ताल मूर्छानादि ग्राम,
हाव भाव पानि मुरनि नैन खंजनी ॥ ७ ॥
श्रीरामचरण युत समाज मेरे हिय में विराज,
यह विहार नित अखण्ड रसिक मण्डनी ॥ ८ ॥

सरद पून बिमलचन्द बिमल मही अनन्द कन्द, रामचन्द्र रासरच्यो देखन सखी धाई ॥ १ ॥ सरयू पुलिन बिमल कूल

फूले बहु रंग फूल कमल चम्प केतकी कदम्ब सुरभि छाई ॥ २ ॥ बोलहिं सारो मयूर कोकिला मराल कीर, गुञ्जहि अलि सकल राग रागिनी बनाई ॥ ३ ॥ किन्नरी अप्सरा गान मूर्छन स्वर ताल तान, धरहिं भूमि तरून लतन नीर गगन जाई ॥ ४ ॥ बाजहिं मृदंग जंग सारंगी तमूर चंग बीण बेणु आदिक स्वर ताल गति सुहाई ॥ ५ ॥ युग युग सखि बिच बिच एक मध्य रामनिरतत, संगीत ताण्डवी सुगंध गति अनेक लाई ॥ ६ ॥ गावहिं षट राग राम रागिनी स्वर ताल ग्राम, सबधरि सखि रूप रामरास हेतु आई ॥ ७ ॥ जानकी रघुनन्दन मनभावति भये रैन ब्रह्म श्रीरामचरण सर्व जीव परमानन्द पाई ॥ ८ ॥

आज सखी लखु रास मंडल में नृत्यत हैं रस रंग भरे ॥ वन अशोक सम भूमि खचित मणि रवि सम अमित प्रकाश करे । श्रीरघुनन्दन जनकनन्दनी अमित मदन छबि अगंधरे । क्रीट मुकुट चन्द्रिका मनोहर भूषन अँग अँग नगन जरे ॥ कुण्डल मकर हार मोतिन के बैजन्ती बनमाल गरे ॥ नासा मणि झूलत अधरन पर केसर चन्दन खौर करे ॥ मोतिन मांग भरी बर बेनी कुटिल अलक जनु भ्रमर खरे ॥ मणिकंकन

पहुंची कर चूरी बाजू बंद जराऊ जरे ॥ नील पीत पट लसत दुहुन तन श्याम गौर मिलि लगत हरे ॥ किंकिनि मुखर अरुण कर पल्लव पग नूपुर झनकार करे ॥ थेइ थेइ करत भरत स्वर अलिगन निरतत पिया संग अनन्द भरे ॥ वजत मृदंग ढोलक सारंगी झाँझ मजीरा वीन वरे ॥ जुग जुग सखिन बीच रघुनन्दन करसों कर धर लसत खरे ॥ कर मण्डल निरतत सखियन संग निरखि मदन वहु मूरछि परे ॥ पूर रह्यो वन मंडल सोरस अचर सचर चर अचर करे ॥ सुरमुनि अगम सुगम रसिकन को रसमाला यह ध्यान धरे ॥

रसिक दोऊ नृतत रंग भरे ॥ विपिन अशोक रास मण्डल विच जनकलली रघुलाल हरे ॥ अमित रूप धरि करि कछु चेटक जुग जुग तिय मधि श्याम अरे । क्रीट मुकुट की लटकि चन्द्रिका झुकनि मदन मद दूर करे ॥ मोतिन हार जुगल उर राजत कुन्द मालती माल गरे ॥ पग नूपुर मंजीर मधुर धुनि कंकन किंकिनि मुखर तरे ॥ मुरज मजीरा ढोल सारंगी अरु मुरली के टेर करे ॥ विविध ताल संगीत अलापत ततथेइ ततथेइ कहत खरे ॥ कवहुं मधुर मुसक्याय के दम्पति निरखति छवि भुज अंश धरे ॥ कवहुँ

सुरति करि व्याह समय की फिरति भांवरी रसिक वरे ॥ यह रस रास महा सुख सागर द्वादश योजन लोसवरे ॥ रस-माला भरि पूरि रही बन जग कोइ बुन्द प्रकाश करे ॥

नटत सियाजू पिया लेत वलिहरिया ॥

छम छम छमकत नूपुर वजावत पिया मन मोहति कहति हरि हरिया ॥ चंप फूल पर घन सोहत छबि तापर नखत दामिनी फूल झरिया ॥ लेत तान जब प्यारी नई नई वाह वाह कहत पिया जू स्वरभरिया ॥ नवल बिहारी प्रिया विरिया खिलावत जय जय कहत सखिन मनहरिया ॥

नटत छबीले छैला सिया मन हरिया ॥

जव पिया घूमत वागा फहरत सिया मन कहरत मदन लहरिया॥ कंपत चलत पसेवनि अंसुवा उमगत मनहुं सावन की नहरिया॥ गिरि गिरि लेत पिया तान अलापत मुरछि परत सखि सिय थरहरिया॥नवल बिहारी प्रिय पिय रस लूटत प्यारी पर छिरकत चन्दन फुहरिया ॥

आज जनकदुलारी रस रंगन भरी ॥

चम्पा के बरन वारी वसन सुरंग वारी बदन मयंक वारी रूपअगरी ॥ अरुण अधर वारी बोलनि मधुर वारी तिरछी

चितवनि सर मारति खरी ॥ वेसर सुपास वारी भुजन मृनाल वारी उरज उतंग वारी मदन जरी ॥ मोतिन के हार वारी मध्य भाग छीन वारी ॥ जघन गंभीर वारी भावन भरी ॥ गमन मराल वारी नूपुर झनकार वारी रसमाला उर वारी मोह्यो मनरी ॥

सांवरे सलोनेजू झमकि झुकि आवरे ।
शरद की रैनपिया अधिक सोहावरे ॥

मंदमुसुकाये प्यारीजू के गलबांह दियें ऊँचे स्वर तानले मधुर स्वर गावरे ॥ रासमण्डल अली संगलली करधरि छमछम छननन नूपुर बजावरे । कटि लचकनि ग्रीव मुरनि घुरनिनैन कुण्डल हलक मनि क्रीट झलकवारे । नवलविहारी प्रिया लली संग रसवस अली संग लताकुञ्ज मन ललचावरे ॥

आजु सरद रैन गोरी झमकत आवरे ।

गोरी चंद गोरी लली चन्दन के बिन्दागोरी गोरी मनि वसनभूषन झमकावरे । उरज उतंग गोरी मन्द मुसुकनि गोरी गोरी दृग कोरन सो मदन जगावरे ॥ हिय बिचहार गोरी कटि में किंकिनि गोरी गोरी पग नूपुर छमकि

छमकावरे ॥ नवलविहारी प्रिया ललीलाल हिलमिलि नटत उमंग रागरागिनी जमावरे ॥

झमकि झमकि ललीलाल की नटनियां ॥

निरखि निरखि अली हिय कसकनियां ॥

बाजत मृदंग वीन सारंगी तमूरा झीन अलगोजा बंशी बाजे बाजत पैंजनियां ॥ मृगीनाचै चन्दपर शेषनाचै शंभुपर कवि नाचै बिम्बपर मनके हरनियां ॥ कर सोहै करधरे थिरकि थिरकि अली तत्ताथेइ तत्ताथेइ ताथेइ कहनियां ॥नवलअली-के लली बन्द के बंधनियां । रशिक शिरोमनि सों रस के पियनियां ॥

पिया प्यारी नटनि में पायल बजायो री ॥

झननन झननन छननन छननन किनिनिनिनि२ किंकिनि सोहा-योरी ॥ करधरि नटनि चक्रगति घूमनि फहरनि वसनसुगंध छहरायो री । चहुंदिशि अलिगन कुहुकि कुहुकि हिया मदन उमड़तन नूपुर बजायोरी । नवलअली के पिया नायक सुभुज गहि किंशुक प्रवेश करी निवरस पायोरी ॥

प्यारीजू के चंद्रिका में चन्दहुँ लजायो रे ॥

नीलतम घन उड़गन चहुँदिशि सोहै जुग सुत नागिनी अमिय

रस पायो रे । मोहन की टेढ़ी तिरछी नैननकी सान लखि वेसरि हलनहुं में चित्तहुं चोरायो रे ॥ उरज उतंगहुँकी कंचुकी को चमकनि हारहूँ हमेलन की हलनि रमायो रे ॥ नवलविहारी पिया स्वामिनी की निवी लखि मदन के रसवस कसमस छायो रे ।

शरद की रैन में नटत ललीलाल आज ॥

पवन चलत सननन सनननननन झननन नूपुर तदिनवजे झाल आज ॥ चन्दके किरन लली लाल के किरनि मणिभूषण किरनि छबि उठे ज्योति जाल आज ॥ ढोलक सरंगी अरु मृदंग सुवाजत हैं तननन वीन वंशी करत बिहाल आज ॥ कर पर कर धरि अलिगन चहुंदिशि छम छम छमकत कहकत वाल आज ॥ नवलविहारी प्रिय नटत नटत पिया करज उरज गहि करत निहाल आज ॥

करधरि सिया नटे पिया मुख हेरि हेरि ॥

चहुँदिशि अलिगन छमछम छमकत मंद मुसुकनि में मदन रस भेरि भेरि ॥ फहरत बसन सुगंधन छहरत मोतीमाल टुटत सखिन के टेरि टेरि ॥ उरज गहत कर अधर चूमत जब पूछत रसीली बात अली मुख फेरि फेरि । नवलविहारीप्रिया घूंघट मिस निहुकत पियारस लहत बांधत वन्द वेरि वेरि ॥

❀ मेरो एक आली दीजे सांचे नेह हियाके ❀

बड़े बड़े नैना कजरारे सोहे लहलह चितवत बसकरे सांवल सुपिया के । कंचन बरन गोरी मध्यामध्य रसबोरी वसन भूषन सुठि सब अंगतिया के । नृत्य अरू वाद्य गान सब कलाके निधान सब गुन गहे रसमाते बुधिधिया के । रासके विहारीजू से नैना जोरे निसदिन रासमें न आलस करे जाने नवलाजिया के ।

❀ सांवरे सलोनेजू से नैना मोरी लागि गये ❀

नैनन मे नैन सो जुलुफ घुंघरारे कारे अधर सों अधर पिवत रस जागि गये ॥ करज सो करज हिया सो हिया गये गसि लोक परलोक हू के सुधि सब भागि गये ॥ किंशुक गुलाब कली चली रसकेलि गली निसदिन जानै नाहिं झनन झनकि गये ॥ नवलअली सुघन दामिनी परस्पर अरध उरध रस बस रंस पागि गये ॥३॥

❀ पिया हिया लागि रहो न्यारे नहिं जाउरे ❀

गुरुजन के लाज काज हेरो जनि भोरे पिया सुमन के सेज सीया रसवस छाउ रे । पइयां परों तोहि मै तो निशिपति निशदिन राकायुत हित नित अवध बसाउरे ॥ कुलगुरू नीत

हम पूजन सुकरिहौं, उदय जनि होउ मैंतो दुख हिया पाउरे। नवलविहारी पिया बिछुरत पिया प्यारी मरनो सो भलो जनि जिया पछिताउरे ॥

❀सारदविधुचयविजितवरानन विधुकरनिकरसुहासम् ❀

मदनचापजितभृकुटिकुटिलतिल सुमनमुक्तधृतनाशम् ॥
चारूचिबुकदरग्रीवमनोहर स्वधरबिम्बप्रतिभासम्।
मुकुरकपोलचिकुरचयचुम्बित नयनसरोजविलासम् ॥
जनकसुता करधृत परिनृत्यति ललित कण्ठकृतगानम्।
पदनूपुर स्वरञ्जित दशदिशि उचरिततालप्रमाणम् ॥
पश्य मुदा रघुनन्दनमतिशय चित्तचमत्कृतवेषम्।
जनकसुतारञ्जनरतिपतिमदगञ्जनमंगमशेषम् ॥
"श्रीरसिक" भणित सीतापतिगीतं ललितपदावलिनीतम्।
सज्जनश्रुतिसुखप्रदमिदमद्भुतमश्चिततानविनीतम् ॥

❀ युगल छबि देखे नयन सिरात ❀

जनु सुषमा सर मध्य लसत दोऊ नील पीत जलजात ॥
वदन किधौं छबि नगरवसत जहं सम्पति त्रिविध लखात ॥
चोरि लेत चित को जब मृदु हंसि करत परस्पर बात।
कबहुं बैठि चौसर खेलत दोउ हार जीत पगुपात ॥

रूप भरी गुणभरी चतुराई संग सखिन की ब्रात ॥
विहरत कनक भवन गृह आंगन कबहुँ अटन चढ़ि जात ।
देखत फिरत रसिक अली तहं तहं जहं जहं प्रिय दोउ जात ॥

❀ बसो मेरे नैनन में सीयलाल ❀

कांचन घन चपला मरकत द्युति राजीव नैन विशाल ॥
कोटि कोटि रतिकाम विमोहत अद्भुत रूप रसाल ॥
राजत कनकभवन में रसिक अली संग रंगीली बाल ॥

❀ किशोरीजू के अरुणारे दोउ तरवा ❀
मानहुँ अनुरागिन के घरवा ॥

क्या गुलाब क्या कमल कटीले क्या वड़ लाल अनरवा ॥
क्या कुसुम्भ जल बूंद पड़त हीं विगड़त रंग निचोरवा ॥
क्या मखमल क्या सरसो कलंगी क्या मालती पतरवा ॥
इनकी कोमलता के आगे क्या कपोल बटपरवा ॥
ऊर्ध्वपद्म कल्पतरू अंकुश रेखन की उजियरवा ॥
एक एक रेखन पर वारौं त्रिभुवन के शृंगरवा ॥
इनके धोवत डरत देवता जिमि चुइ पड़े इतरवा ॥
इनते लगन नहीं तो वृथा दण्ड कमण्डल करवा ॥

❀ हमारी हो स्वामिनी सीयजू

कृपा खानि मुसुकानि मनोहर वसकरनी पियजू ॥
श्रीचन्द्रकलादि अली गुन आगरि नागरी प्रियजू ॥
कृपा करहिं तव वसहिं सदा श्रीयुगलप्रिया के हियजू ॥

❀ सजीवन जीवन युगलकिशोर ❀

रैन ऐन मद नैन चैन चय चखत चतुर चितचोर।
हंसत हंसावत होश जोश विन वोस लेत रसवोर ॥
सुधि बुधि विशद विहाय छाय छवि होय रहे चन्द चकोर।
आस पास सहचरी सोहागिनि सिखवहिं मदन मरोर ॥
श्रीयुगलअनन्यअली रसिया दोउ उरभि रहे निशिभोर ॥

❀ दगन भरि छवि लखु सीय रघुवीर ❀

कनकभवन राजत प्रिया प्रियतम श्यामल गौर शरीर।
फूल छड़ी प्यारी कर राजत पिय कर शुचि धनुतीर ॥
नजरबाग अनुराग लाग फल नटत मोर मनकीर।
नर देही सुमिरन बैदेही हेतु वदन मुनिधीर।
हृदयपत्र लेखनी प्रीतिकरू तत्वमसी मुदनीर ॥
श्रीजानकीवर दम्पती छवि सम्पति लिखले सखी तसवीर ॥

✳ आजु कौ नवरंग कौ भरसत सुरंगी चीर।

❀ सीयाजू के दृगछवि नित्त नवीन ❀

अंजन मिस रंजन म न पय लखि श्याम सुडेरा कीन ॥
गौर अंग अरुणाम्बर झीनहु कहि न सकत अतिझीन ॥
छिन छिन छटा घटा रस वरसत चित चातक रसलीन ॥
नित संयोग वियोग न सपनेहुँ निज मुद खुद लैलीन ॥
कृपासाध्य गुरू जुगलविहारिनि जानहिं रसिकप्रवीन ॥

❀ प्रियाजू के नेहभरे दोउ नैन ❀

अंजन युत रंजन मनरंजन अलिगन के सुख दैन ॥
खंजन मोर मीन पंकजदल दुरि वन कोउ जल सैन ॥
रती कहैं मैं अहौं रती भरि मैन कहै सम मैन ॥
उमा रमा ब्रह्मानि आदि सब तौली सुमति तुलैन ॥
श्रीमिथिलेश कुमारि प्यारिपिय उपमा तो कहु हैन ॥
जेहि दिशि हंसि दरसत सरसत मुद बरनत बरनि नैन ॥
जुगलविहारिनि जानत प्रीतम जे निरखत दिन रैन ॥

❀ किशोरीजू के अनुपम रसमय बैन ❀

सुधा सुधाकर शुक पिक हूँ नहिं कोकिल हूँ सम हैन ।
मन्द हंसनि रदलसनि अधरछबि फँसनि प्रिया प्रद चैन ॥
अंग अंग छवि फवि कवि दवि मति सारद बरनि सकैन ।

करत विहार अपार पिया संग कनकभवन सुख दैन।
श्रीजुगलविहारिनि भरि उमंग सखि सेवति हैं दिनरैन॥

❀ होरी खेलन लाईं सखियां सुघर सिखाय। ❀

वारी श्रीजनकदुलारी लड़ैती सुषमा वरनि न जाय। फाग चौक विच ठाढ़े पिया सजि केशरि रङ्ग बनाय। बाल सखा विदुषक विट चेटक ते बहुभीर सोहाय। श्रीचन्द्रकला कर दइ पिचकारी रङ्गभरी सुखछाय। प्रीतम दिशि चलाई प्यारी तब पिय रहे मुसुकाय। चतुर चूड़ामणि लै कर पिचका सखियां दईं भिजाय। धूम मची दुहुँ ओर छमाछम नूपुर धुनि दिशि छाय। बाजत चंग मृदङ्ग झांझ डफ कलरव गान सोहाय। रशिकअली यह युगल केलिपर निरखि न नैन अघाय॥

❀ होरी खेलत राजदुलारी ❀

अपने पिया पर उमंगि उमंगि उर मारत रङ्ग भरी पिचकारी
श्रीचंद्रकला विमलादि अग्रसखी इतउत सैन सजी है अपारी
कंकण किंकिणि नूपुरको रव पूरि रह्यो पुर में दिशि चारी॥
बाजत चंग उमंग बढ़ावत गावत गीत रसीली गारी।
उमंगि अवीर गुलाल छयोनभ वहि चली रंगतरंगिनि भारी

दुहुँ दिशि फूलन गेंद कुमकुमा फेकत दौरि प्रचारिप्रचारी। रशिकअली उत जय रघुबर पिय बोलत इत जय जनक कुमारी ॥

❀ खेलैं राघोजी तियन विचहोरी ❀

लालगुलाल भरे तनसोहत मरकत शैल अरुण पसरयोरी। बिथुरे कच आनन छवि राजत चंद चहूँ दिशि राहु फिरयोरी करकंचन पिचकार अस सोहत जनु अहिमुख मणि लै निकस्योरी। पकरि तियन मुख रङ्ग मलत जनु राहु अतन लै शशि झगरयोरी। श्रीरशिक अली यह रूप सुधानिधि जानि अदौ मन मीन भयोरी ॥

❀ साजु नवेली रंगतूं पिया खेलन आवैरी ❀

आपनि पक्ष अलीगन लै संग धूम मचावैरी ॥ भीजे रंग वसन अंग राजत हंसनि सुहावैरी। भींजी अलक कपोलनि लिपटि हिय लिपटावैरी। कर पिचका कटि फेंट गुलालकी चितै चलावैरी। चंग मृदङ्ग उपङ्ग बजत बहु रङ्ग बरषावैरी। फाग में लाज न कीजिये सखि खेल नसावैरी ॥ खेलिखुलैं रस फाग में हेलो तूं यश छावैरी। चली अली सजि फौज आपनी चंग बजावैरी ॥ नूपुर कङ्कण किंकिणि की धुनि

दुहुंदिशि छाऐगैरी। फेकत अबीर गुलाल कुमकुमा रङ्ग बर-पाऐगैरी। घेरि लीये रघुनन्दन को सखि खेल बढ़ावैरी। धुन्धर में धसिधाय धरयो पिय रङ्ग रचावैरी। रशिकअली युवतिन बस प्यारो नाच नचाऐगैरी।

❀ मद छाकी छबीली गहि प्रीतम को रंग बोरेरी ❀

मंद विहंसि मुख मोरि फेरि दृग झकझोरनि चित चोरेरी। छीनिलई करते पिचकारी मुख मांड़त बरजोरेरी। रशिकअली राघव करजोरत गहि रहिं अंक न छोरेरी।

❀ जानकी खेलन होरी पिय संग चली ❀

अपनी २ महल से निकसी उर सोहे चम्पकली ॥ श्रुति-कीरति उर्मिला माण्डवी चारो जनकलली ॥ रामलखन रिपु दवन भरत के जोड़ी बनी है भली ॥ रमकि झमकि पिय के सन्मुख होय मुख भरि रोरी मली। सीयजू के छुटत गुलाल मूठि भरि राघो के पिचका चली ॥ दुहुं दिशिते रंग बरसन लागे कुम कुम छाई गली। राजा दशरथ कौशल्या झरोखनि दृग सुख लेत भली ॥ सीताराम विनोद फाग में बलि बलि अग्रअली ॥

❀ रघुनन्दन खेलत होरी ❀

विपुल सखिन जुत जनकनन्दिनी बनेउ सखा हरि ओर । फागमची वहुवाजन गानन होत शोर चहुं ओर ॥ लसैं सब सुन्दर जोरी ॥१॥ कुमकुम कीचमची सरयूतट लालभई जल धारे । वर्षहि रंग देवतिय नाचहि काहू पट न संभार ॥ अंग सव रंगन वोरी ॥२॥ राम सखन ललकारि अग्र वढ़ेउ इत-सखियन करिजोर । भरतशत्रुहन लखनलालको धरिलाई निज ओर । करहिं मनभावत सोरी ॥३॥ भूषन वसन उतारि लीन्ह सव निज भूषन पहिराई ॥ श्रीरामचरन सखि छोड़ दीन्ह तव सीयकी जीत कहाई ॥ भई जय जनककिशोरी ॥४॥

❀ सीताजू खेलहिं होरी ❀

रामसखन की टोल बनाई सिय सखि टोल सुहाई । खेलहिं फाग हरषि दोउ दिसिते सो सुष पार न पाई ॥ चलो सखि देखन सोरी ॥१॥ वरषन लगे रंग दोउ दिसिते भई अरुन अंधि-आरी । होत कोलाहल मयल प्रेमवस काहुन लाज संभारी ॥ हंसैं प्रभु जनककिशोरी ॥२॥ घेरि सखिन तब धरेउ राम कहँ मुखभरि रंगलगाई । लियेउ छिनाइ उतारि हार पट सिय को हारपहिराई ॥ निहोरहु दोउ करजोरी ॥३॥ काजल दै

सियचरन महावर भालमें तिलक कराई। श्रीरामचरन विहंसत रघुनन्दन सखियन ताल बजाई॥ लला छवि आज लखोरी ॥४॥

❀ तुमतो नित रारि मचावो जबै जस अवसर पावो ❀

आज तुम्हैं धरि के रघुनन्दन मुख भरि रंग लगाऊं, छीन लेऊं करते पिचकारी तब सीय सखी कहाऊं। भली विधी नाच नचाऊं॥१॥ आज तुम्हैं धरिके रघुनन्दन सुन्दरीरूप बनाऊं, ले जैहौं मिथिलेश लली ढिग पिय कहि पांय पराऊं चूक सब माफ कराऊं ॥२॥ चूरी चून्दरि लखनलाल को बेन्दी युत पहिराऊं, श्रीरामचरण करि तुरत दिखाऊं तब सीय सखी कहाऊं। जोपै कहुं भागि न जावो ॥३॥

❀ परि मेरो श्याम सनेही मेरे वस अनुराग री ❀

अधरामृत दै गलभुज मेलौं खेलौंगी संग फाग री। कुचनि गुलाल लाल पर डारौं उरझो मनमथ जागरी। नैनन की सैनन से छिरकौं प्रकट करौं सब लागरी॥ पियके शीश ओढ़ाउब चून्दरि मै जू धरौं शीर पागरी। लाल नचावौं आपने आगे मैं गावों हंसि रागरी। जोइ जोइ कह्यो कियो सिय प्यारी भारी भरी हैं सुहागरी। श्रीकृपानिवास महासुख निरखत सखियां सराहत भागरी॥

❀ सखियां लागी छिरकन वे रंग पट फहरयो पटरानी ❀

मनहुं तमाल फलन हित कोटिन दामिनि सींचत पानी ॥
केशर नीर अंग सों ढरकत उपमा कछु उर आनी।
मानहुं नील शिखर सों झरि झरि शारद धरनि वहानी ॥
वागो वसन लसन तनकी छवि कवि कोविद थकि वानी।
मानो सुषमा गण कुमकुम सो रचि चरचित रूप सिहानी ॥
तापर डारत लाल गुलालनि वाल सबै मुसुकानी ॥ श्रीकृपा-
निवास रसिक राघो सों सीय की केलि वखानी ॥

❀ श्याम मुख रंग की बून्द ढरी ❀

मानहुं काम कसौटी उपर कंचन की कस परी॥
अलकैं चुवैं मनहुं घनमाला रस अनुराग भरी।
श्रीकृपानिवास अलीगण अंखिया सीयवर रूप अरी ॥

❀ श्याम मुख लाल गुलाल लगी ❀

नील कमल जनु प्रकट प्रात रवि अरुण किरन जगमगी ॥
अलकैं घूमि आई मुख उपर केसर रंगरंगी ॥
षट् पद वधू आय अम्बुज लौं अरुण पराग पगी।
रूप अनूप विलोकत आली नेह सनेह सगी ।
दम्पति अली रूपनिधि सीते पीय अति रूप पगी ॥

❀ बनि आई रंगीली नारि होरी रंग भरी। ❀

सुनिये सखा सकल रघुवंशी ढूंढि ढूंढि जैवारि॥
सजग होउ न तो अबला प्रबला दैहैं फौज बिगारि॥
प्रान निछावरि कीन्ही ललीपर युगलप्रिया बलिहारि॥

❀ कांचन वन कमला के तीर रंग होरी साज सजाई॥ ❀

चलिये श्री रघुवंशलाडिले जनकललीजू बुलाई॥
कुञ्ज रसाल विचित्र मणिनमय रचित परमसुखदाई॥
सदा वसन्तलता द्रुम फूल्यो भूलत लखि गुमराई॥
सुनत उठे लाल छवि छाके धरि ग्राल भुज मुसकाई॥
चन्द्रकलाजू के भाग्य विभव लखि सची रमा ललचाई॥
आवत रंग उमंग भरे प्रिय आन अज प्रिया ढिग जाई॥
श्याम कपोल खुल्यो सुन्दरता लली गुलाल लगाई॥
बाजत साज अनेक यंत्र मिलि गावति अली समुदाई॥
श्रीयुगल प्रिया निरखत गलबहियां उमगि मृदंग बजाई॥

❀ होरी धूममची मिथिलापति के दरबार॥ ❀

रही बरात मास फागुन लौं नित नई होत बहार॥
चहुंदिशि महल विचित्र जटितमणि कञ्चन के झलकार॥
अंगनाई विस्तार बन्यो मणिमण्डप मध्य संवार॥

तने बितान मखमली जरकस फरस बिछे अति प्यार ॥
अमित सहवी कुण्ड बने रंग नहर चली बहुधार ।
चंद्रकला अलवेली मुदित एक दोउदिशि मिलि उपचार ॥
फागु खेलावति अलिगन गावति परे कुमकुमनमार ।
बाजत साज अनेक यंत्र मिलि दूलह राजकुमार ॥
गावत उमगि मोहनी छाई प्यारीजू लई करतार ।
सुनत श्रवण दोउ राज मगन मन अगिले चौक मझार ॥
प्रेमा एरा बराती उमगे रही न देह संभार ।
बसि हिय साज समाज रंग छबि रंगमहल के द्वार ॥
श्रीरामचरण रसिकेश लखाये श्रीयुगलप्रिया सुखसार ॥

❀ लाड़िली मान न कीजै होरी के दिननमें कौन तिहारी बान ❀

बरस बरस को खेल छाड़ि तुम बैठि हो भौंहें तान ॥
मान सिखावन लेहु हमारो बिनवति हैं युग पान ।
मधुर प्रिया पिय पास चलो उठि रुचिर केलि को दान ॥

❀ मति डारौ बरजोरी लाला रंग भरी पिचकारियाँ ❀

अनखानी फौजे की फौजैं मिथिलापुर की नारियाँ ॥
तुमतो हो रघुबंश लाड़िले हम निमि बंश दुलारियाँ ।
रघुबंशी सेना संग तुम्हरे निमी बंशिन की धारियाँ ॥

सिमिट लली ढिग आईं सिगरी चंद्रकलादिक नारियाँ।
जो सारी पर रंग परैगो लाखों दूंगी गारियाँ॥
मृदु मुसुकाय सजी पिचका प्यारी कुमकुमा पैवारियाँ।
युगलप्रिया लालन कपोल पर दें गुलाल छवि वारियाँ॥

❀ सइयाँ जाने न पैहौ डारो न मोपर रंग ❀

श्रीमिथिलेशलली की अली सब आनि जुरी एक संग॥
सुनि सकुचाय रमाय दृगन दृग बोलत वचन उमंग।
काह करेगी विपुल नारि लगि जावो हमारे अंग॥
कंठ लगाय भिजाय भिजे रंग बढ्यो परस्पर जंग।
श्रीयुगलप्रिया यह फाग अनोखी लखि रति पति मदभंग।

❀ आज चलो सजि फौज पिया को मैं फाग खेलाऊं ❀

उनके साथ फौज रघुवंशी निमी वंश देखराऊँ, श्याम को मान नवाऊँ॥ जाय कहो कोउ अवध लाल ते अब प्रमोद वन जाऊँ, फाग को साज सजाऊँ॥ फूल छड़ी कुमकुमन मारिके पिय को फौज भगाऊँ, तबे निमी वंशी कहाऊँ॥ घेरि अकेलि गुलाल मेलि मुख चुंबन धूम मचाऊँ, ललन की ऐंड छोड़ाऊँ॥ युगलप्रिया तब नाहीं कहौं कछु मिलि हिय कण्ठ लगाऊँ, रसिक सों होली गवाऊँ॥

❀ साजि चलौ भलि भांति विपिन में धूम मचाऊँ ❀

चंद्रकलादि सुनौ मेरी बातें घाते सकल बताऊँ। मंडल चौक चित्र रचि डारौं कुंकुम ढेर सजाऊँ, कपूर आकाश लगाऊँ॥ फूल छड़ी गेंदों की गोली टोली पिय की भगाऊँ सबै मिलि होली गवाऊँ॥ मोहन यंत्र बीन तुमरी लै ठुमरी तान सुनाऊँ, रसिक पिय सुधि बिसराऊँ॥ युगलप्रिया हो मृदंग बजाऊं, नई नई उपज धराऊँ, ललन को पाँय पराऊँ॥

❀ खेलत आज रसिक सिय नागरि रंग रंगीली होरी रे ❀

राजत रुचिर कनक मंदिर में ललना गन चहुं ओरी रे॥
छूटत फुहारैं मुख मण्डल पर गुलाब केशर घोरी रे।
कबहुँ कुमकुमा चपल कला करि डारत नवल किशोरी रे॥
तब हँसि रहे श्याम नट नागर प्रीति प्रनय नहीं थोरी रे।
युगलप्रिया पिय लखत चंद्रमुख करि न सकत बरजोरी रे॥

❀ चलो देखिये रंग होरी। मिथिला काञ्चन वन खोरी ❀

श्रीजनकललीजू की अलियाँ, जिन उमा रमा छबि छलियाँ।
गलियों में गावत आवै, सीय रघुनन्दन मन भावै॥ १॥
श्रीचंद्रकला वीणा सजोरी चंद्रावती मृदङ्ग टंकोरी। सुभगा-

जू सप्त स्वर घोरी, सुनि लालन मन उमग्यो री ॥ २ ॥
मिली होरी गावत लाला प्यारी कर लइ कठताला कमलाजू
रीझि रङ्ग वरषैं गालन गुलाल मलि परसैं ॥ ३ ॥ जहँ
रङ्गमहल अंगनाई रंगों की नदी बहाई । मंडप में बैठे
जोरी, लखि युगल प्रिया तृणतोरी ॥ ४ ॥

❀ खेलन आई होरी बनि ठनि राम पिया सों सीया गोरी ❀

अलबेली संग सखियाँ अमित लिये रूप रती मद मोरी ॥
कंचन पिचका सब कर लीन्हें केशरि रंग भरोरी ।
बाजत चङ्ग मृदङ्ग झांझ बहु जनु गरजत घनघोरी ॥
उमड़ि अबीर गुलाल छयो नभ बादल ज्यों मड़रो री ।
चमकत चपला वसन बादले भूषण झमक झिंगोरी ॥
गारी गान ताल कर तालनि दादुर धुनि समसोरी ।
धावत किलकारी करि अलिगन शिषि बोलत चहुं ओरी ॥
कादम्बिनी ज्यों बरषन लागीं केशरि रंग झमझो री ।
रसिक अली पिय मगन लगे तब पकरन को सब दौरी ॥

❀ जानकी खेलन होरी पिय संग चली ❀

अपनी २ महल से निकसी उर सोहै चम्पकली ॥
श्रुति कीरति उर्मिला माण्डवी चारो जनक लली ॥

राम लखन रिपुदवन भरत के जोड़ी बनी है भली ।
रमकि झमकि पियके सन्मुख होय मुखभरि रोरी मली ॥
सीयजूके छुटत गुलाल मूठि भरि राघोके पिचका चली ।
दुहुं दिशि ते रंग बरसन लागे कुमकुम छाई गली ॥
राजा दशरथ कौशल्या झरोखनि दृग सुख लेत भली ।
सीताराम विनोद फाग में बलि बलि अग्र अली ॥

❀ छबीले छैल की कछु आज उमंग नयी ❀

खेलन फाग छबीली सिया संग कर पिचकारी लयी ।
अबीर गुलाल कुमकुमा झोरिन धुँधि गुलाल छयी ॥
चलीं ललकि ललकारि नारि सब अङ्ग अङ्ग मोदमयी ।
सखियन नाम निरञ्जन मेट्यो, अंजन दृगन दयी ॥
छीनि लयी करसों पिचकारी, सुधिबुधि बिसर गयी ।
भूलि गये सगरी चतुराई हारे जगत जयी ॥
ज्ञानाअली बड़भागिनी सियजू पिय उर हार भयी ॥

❀ कहाँ सीखे हो ललन ऐसी रगर झगर ❀

क्या तुमहि अनोखे खेलारी अगर ॥ जानि पड़े पिय पीर न जानो, निडर सदा यश जगत जगर । भरि पिचकारी दृगन तकि मारत, अबिर मलत मुख बीच बगर ॥

रसिक छैल छलछाड़ि छबीले होरी खेलो मति रोको डगर ॥
नाजुक बहियां मुरकि गई मोरी, भींजि गइ तन सारीसगर ॥
कौशल राजकुमार रंगीले, धूम मचायी अवध नगर।
ज्ञाना अलि प्रमोद वन कुञ्जन, श्रीसरयू की कगर कगर ॥

❀ मैं तो रंगि उनहीं रंग प्यारे। ❀
काहे को पिचकारिन मारे ॥

गरबीले गुण रूप रंगीले, छैल छबीले रसिक दुलारे।
लालगुलाल को कौन काम है नयन गुलाल सरस रतनारे ॥
यद्यपि केलि कुशल छवि आगर नागर नवल जगत उजियारे
कहँ सीखी ऐसी बरजोरी झकझोरी बहियाँ नृप बारे ॥
ज्ञानाअलि रसकेलि सीखी नहि, पढ़ि आवो बलि जाऊँ
तुम्हारे ॥

❀ पिय खेलिय आजु सम्हारि काल्हि रंग डारी ❀
जरा कीन्ही हिय न बिचार सीय सुकुमारी ॥

तुम्हे वेद कहत चित मृदुल भेद बिनु जाने। तुमरो चित
वेदन रहित खेद नहिं माने। चितवनि में चितवित हरत
फिरत इतराने। फरफन्द छन्द अतिभरे हमहुं पहिचाने ॥
अब हूजै सजग नृपेश सुवन धनुधारी ॥ पिय० ॥ श्रीभरत-

लखन रिपुदलन सुललन बुलाओ। औरो जे सखा सहाय सोऊ संग ल्यावो॥ इत ललना गण मन किये प्रनहि रन भावो। सकुचो जनि सकुच दुराय धाय चलि आवो॥ सबके मधि प्रीतम तुम्हिं बनैहौं नारी॥ पिय खेलिये०॥ सुनि चन्द्रकला कल बैन चैन प्रद ही के। करि नैन सैन सुख ऐन चले ढिग सीके। स्वामिनि सुठि सरल सुभाव जानि हिय पीके॥ लालन गालन सुगुलाल दयी हँसि नीके॥ मुख श्याम अरुण रंग पाय भई छवि भारी॥ पिय खेलिय०॥ बाजत मृदङ्ग डफ बीण उपंग सितारी। कल जलज तमूरा ताल देत कर तारी॥ गावैं कल कोकिल बैनि प्रेम मतवारी। दम्पति दीन्हे गलबाँह बाह पिय प्यारी॥ श्रीजानकीवर जय जयति प्रीति लता वारी॥ पिय०॥

❀ बनि आये अनोखे आजु काल्हि सुधि भूलि गई ❀

सुनि मुसुकात डेरात गात कस फागुन निधि उमड़ात लाज निरमूलि गई॥ आओ सिर नाओ प्यारी पग सरसाओ रसराज सुहठि गंठि खुल गई॥ सोई कियो रसिक नव नागर सुख सागर महाराज नाज तिय तुलि गई॥ जुग जुग जीवो युगल जानकीवर दरस परस रस पाय सुप्रीतिलता फूलिगई

❀ पिय प्यारी तुमरो अहो भाग ❀

सिय स्वामिनी कर सुगुलाल लाग ॥ तन श्याम जमुन सिय कर सुगंग, रंग अरुण सरस्वति सद प्रसंग, यह परब जोग भव रोग भंग, सखि गन दृग न्हायो भल पराग ॥ सुनि काव्य कला कर उक्ति जुक्ति, नागर रसेस भल भाव सुक्ति, मुसुकाय आय करि लाज मुक्ति, सिय प्रीति लता अनुराग जाग ॥

❀ सखियन रंग रंगे होरी खेलत श्री रघुनन्द ❀

विविध शृङ्गार किये दुहुँ दिशि ते एक ते एक दू चंद।
निज निज टोल सम्हारि खड़े भये बढ़ेउ समुद्र अनन्द ॥
अनुज सखन युत लिये पिचकारी, भरिभरि विविध सुरंग।
मारत इत उत जनकनंदिनी, कर गुलाल सखि संग ॥
बाजन गान होत धुनि दुहुं दिशि, मारहिं मुरि मुरि अंग।
वरसहिं रंग देव तिय नाचहिं, गावहिं तान तरंग ॥
चार चतुरि सखि सखा रूप धरि पिय दिशि गईं छलछंद।
कहि जितहु ललकारि जानकिहिं, अग्र बढ़हु रघुनन्द ॥
धाये राम ललकि जब ढिग गये धरेउ सखिन करि फंद।
श्रीरामचरण सिय चरण परहु तब जाहु सखी सुख कंद ॥

❀ देखो देखो आये होरी के खेलैया आज ❀

बनि ठनि नख शिख सजे अजब साज ॥ १ ॥ भरि लीन्हे सुकर पिचकारी सुरंग अंग अंग उमंग तरंग सुजंग, वर व्यंग वैन मद हरि सुनैन मन हरन नैन करि सैन व्याज ॥ २ ॥ गति मन्द मन्द आनन्द कन्द दशरथनन्द-नन्द सीय चन्द सुलखि, छबि फन्द सुफँसि रस रसिक राय सिर नाय खरे गये बिसरि नाज ॥ ३ ॥ तब हँसि रसि रसि रसलाल गाल रंग दै गुलाल दृग कै निहाल, अलि आल-बाल पिय बिच तमाल सीय प्रीतिलता हिय बस समाज ॥ ४

राग मूलतानी (शूल)

❀ शुकुलपञ्चमी आईसोहागिनि सुघरिसुभग तन सजियेशृङ्गार ❀

आगम फाग बसन्त मनावो राम रसिक संग रस को त्यो-हार। बरस दिनन के मन को मनोरथ सफल फलन को आजु बहार। कृपानिवास सीया स्वामिनी सुख राम सखन हित सकल उघार ॥

❀ हिय अभिलाष सुप्यारे आजु तुम्हैं होरी खेलैहौं ❀

तुम्हरो शृङ्गार अंग निज धरिहौं, अपनो तुम्हैं पहिरैहौं।

हौं तूनीर कमर धनु सर कर तव कर कमल करैहौं॥ अनोखी नारि बनैहौं ॥ १ ॥ पद नूपुर बिछिया कटि लहंगो सारी सुरंग वोढ़ैहौं । वेंदी भाल चन्द्रिकाके युत नकवेसरि छवि छैहौं । नैन अंजनहू लगैहौं ॥ २ ॥ मुखवीरी गुलाल सुठि गालहिं लखि निहाल दृग ह्वैहौं ॥ तुम पिचकारी भरि लै दौरो हौं बचाय रंग जैहौं । पकरि पुनि पिय तोहिं लैहौं ॥ ३ ॥ जब करि मान मानिनी वैठि हौं तव परि पांय मनैहौं । युगल विहारिणि श्रीगुरुकरुना हिय सुखसिन्धु समैहौं । मीन मन नहिं बिलगैहौं ॥ ४ ॥

❀ खेलत आज अनोखी होरी ❀

कनक भवन दुखदवन रमन थल भल नित मुद सरसो री ॥ उत अवधेश सुवन सिंहासन इत मिथिलेश किशोरी । भली दोउ साज सजोरी ॥ १ ॥ नैन सैन पिचकारी भाव भरि हंसि मारत दुहुं ओरी । हँस शेष के अंश धाय के झपटि लपटि वैठोरी ॥ चंद पै चंद बसो री ॥ २॥ कन्द पै ताड़त तड़ित पै कन्द है तेहि युग शुक वय थोरी ॥ ता मुख दाड़िम बीज बिराजत सो पुनि उड़ि न सको री ॥ जाल युग तापै परोरी ॥ ३ ॥ केहरि को गजराज सूंड़ि गहि अपने अङ्क

करो री। केदलि पै केदलि कञ्ज पै पंकज तापै भँवर गुँजोरी ब्रह्म कलरव उपजो री ॥ ४ ॥ फागुन मास निवास हास-रस लाज तो आज भगो री। मनभावन सो करो मनभावन यह कहि अबीर उड़ो री ॥ अरुण दस दिसहूँ भयो री ॥५॥ लपटि झपटि गईं लपटि लाल को चहुंदिसि से नई गोरी। सीय सीयपिय दम्पति सुख सम्पति फगुआ मंगाय दियो री पाय बढ्यो हर्ष हियो री ॥ ६ ॥ जुगलविहारिनि सीय स्वामिनी की अनुगामिनी कह्यो री ॥ सदा सोहाग बाग फूलो फलो अचल रहे यह जोरी ॥ निरखि छवि कहैं तृन तोरी ॥ ७ ॥

(चैता)

❀ निसिदिन तरसे नयनमां री आली श्याम बिना ❀

जब सुधि आवत श्याम सुन्दर की हिय के मरोरे मदन मां ॥ री ॥ श्रीदशरथ नन्दन प्राण पती को बिन देखे न चयनमां ॥ री ॥ श्रीयुगलअनन्य अली बिरहिनियां चाहत अब ही मिलनमां ॥ री ॥

❀ तोरे लागी भई मतवरीया हो रामा ❀

दशरथजू के छैल छबीले श्याम वरण मनहरिया हो रामा ॥

सरयूतीर गुलाब कुञ्ज में विपिनप्रमोद बिहरिया हो रामा ॥ युगलप्रिया संग नवल सहचरी नवल सिया सुकुमरिया हो रामा ॥

❀ बिनुदेखे श्याम सुरतिया होरामा न भावै दिनरतिया ❀

सुमिरि सुमिरि गुन ग्राम तिहारे मिलन उछाह बढ़तिया हो रामा ॥ १ ॥ नहिं जानौं बिलमाय लियो केहि पठवत एकौ न पतिया हो रामा । कब वह समय सोहावन ऐहैं मिलि सीतल ह्वै हैं छतिया हो रामा ॥ २ ॥ अवध सरजु तट तीर बैठि संग कहिहौं रहस रस बतिया हो रामा । जुगल बिहारिनि गुरु सिय करुना लखिहौं मोहनी मुरतिया हो रामा ॥ ४ ॥

❀ जेहि दिन पियसे मिलनवां होरामा सोइ सुभदिनवां ❀

मिलन उछाह अथाह माह सुख चाह बढ़त छिन छिनवां हो रामा ॥१॥ सरल सुभाव जाउं बलिहारी बिलमायो प्रभु किनवां हो रामा । पलक कलप सम बीतत मीत बिन व्यर्थ अहै जग जिनवां हो रामा ॥ २ ॥ सरन भरोस एक सतगुरु प्रद हौं सब साधन हिनवां हो रामा । जुगल बिहारिनि बिरहमरज हरि देहु दरस सुख छिनवां होरामा ॥३

❀ सरयू किनरवा हो रामा विहरत प्यारा रे ❀

कुञ्जन छहियन दै गलबाँहीं सिय संग अवधपियरवा हो रामा। भूषण वसन अंग प्रति सोहे गर फूलन की हरवा हो रामा ॥ मोहनि अस जिय होय सखी री दौड़ि मिलूँ पिय गरवा हो रामा ॥

❀ विधु सम आनन पहियां होरामा लट लटकत हैं ❀

मैं सुरुझावन गई सुनु सजनी शीतलकुञ्जकी छहियाँ होरामा ॥ सुरुझावत में मो मन अरुझे काले जुलुफन महियाँ होरामा। मोहनि यह लखि अवध साँवरो हँसि दीन्ही गलबहियाँ हो रामा ॥

❀ बैठे युगलबिहारी री सजनी दिये गलबाहीं ❀

पान बिरा पिय प्यारी मुख पिय देत पिया मुख प्यारी री ॥ सजनी० १। पान खात बतरात परस्पर हंसिहंसि अलक संवारी री ॥ सजनी० ॥ कबहुं परस्पर मुख चूमत हैं पीवत अधर सुधारी री ॥ सजनी० ॥ कबहुं लटक पिय प्यारी ऊपर पिय उपर सिय प्यारी री ॥सजनी०॥ कबहुं बलैया लेत परस्पर राई लोन उतारी री ॥ सजनी० ॥ यह रस-मोद निरखि सुख अहनिसि होत पलक नहिं न्यारी री ॥ सजनी० ॥

❀ फूल बंगला ❀

❀ बंगला फूल मध्य दोउ बैठे सोहत श्यामा श्याम ❀ अरुन बसन प्यारी तन राजत प्रीतम पीत ललाम ॥ जाही जूही ललित चमेली सेवति बेला दाम । झम झम परत गुलाब फुहारे घनन घनन घनश्याम। निरखि प्रिया अनुपम छबि प्रीतम नवल रूप अभिराम ॥ ३ ॥ कहत बनत नहिं कहो कहा सखि ये कामहु के काम। प्रीतम देखि प्रिया सुन्दरता कहत मनहि मन राम ॥ ४ ॥ हमतो बिके सदा इनके कर बिना मोल के दाम । रहो दोउ आनन्द परस्पर श्रीजानकिवर सुखधाम ॥ ५ ॥

युगल ललन नव छबि शृङ्गारो । फूल सेज चांदनी सुफूलन फूल पाग सिर धारे॥ १ ॥ जामा फूल फूल ही पटुका फूल पेंच गलहारे। फूल कंचुकी चूनरि फूलन फूल मांग झलकारे ॥ २ ॥ फूल माल दोउ गरे बिराजत कोटि चन्द्र उजियारे। मानो फूल सिन्धु में खेलत रति मनोज द्वै तारे ॥ ३ ॥ फूल शृङ्गार देखि प्रिय प्रीतम सखियां प्रान

बिसारे। श्रीजानकीबर की सुरि सजीवनि वाह कहत बलि-
हारे ॥ ४ ॥

* बहत सखी शीतल मन्द बयारी *

सुभग सुमन बारी मधि सुन्दर हेम हौद छबिकारी ॥
सुघटित मणिन जटित चारो तट पूरित वासित बारी।
ता मधि रत्न रचित वेदी मानो मनसिज हाथ सुधारी ॥
तापर सुमन कुञ्ज सखियन रचि ललित झरोखे जारी।
ता मधि सेज विविध सुमनन रचि कुन्द गुलाब निवारी ॥
बेला बकुल कदम्ब चमेली गुथे गुच्छ हजारी।
बैठे दोऊ नव नेह भरे नृपनन्दन जनककुमारी ॥
सुमन सिंगार किये अंसन भुज दिये शोभा अति भारी।
पिय सिर पाग सुमन को जामा सिय तन सुमन की सारी ॥
बहु विधि सुमन माल पहिरैं उर सुमन गुच्छ कर धारी।
सुमन सिंगार किये बहु बनिता नव वय अति सुकुमारी ॥
कोऊ कर पानदान पिकदानी कोउ शीतल जल झारी।
अतर अनेक प्रकार लिये बहु बहु गुलाब सुठि बारी ॥
कोऊ अति मधुर मधुर स्वर गावत चाप राग चित्त हारी।
रशिकअली अद्भुत यह शोभा निरखत तन धन वारी ॥

* तपन लागी ग्रीषम ऋतु सों अय पिय गवन न कीजिये *

तहखाने खसखाने शीतल तहँ बैठे सुख लीजिये । लता कुञ्ज पर्यंक अंक पिय अधर सुधा रस पीजिये । हदमय नाव डारि जल क्रीड़ा अरस परस सुख लीजिये । फूलन हार राग चन्दन को नेह नवल रस भीजिये । अलि दम्पति रमिये पिया प्यारी तरणी चुनौती दीजिये ॥

* मोतिन महल तामे सरयू नहर लागी छुटत सुगंध *
* ज्यों गुलाब की फुहारे री । *

नवल निकुञ्ज बन्यो पुष्पन गुलाबन को फूल्यो है चतुर्दिशी लषत किनारे री ॥ तखथै रसफ (फरस) लागी प्यारी पिया प्रेम पागी अलीगन रंग रागी तानै लै उचारै री । वीना मृदंग चंग आदि यंत्र बाजै जुगलप्रिया रीझि २ तन मन धन वारैरी ॥

* रथ चढ़ि चले सरयू तीर *

रसिकनी मिथिलेशनन्दिनी रसिक श्रीरघुवीर ॥ प्रथम मास अषाढ़ पावस बहत त्रिबिध समीर । उमड़ि घुमड़ि घमंड घन धुनि ब्यापि रही गंभीर ॥ श्याम गौर सुरंग अंग सुपहिरि कुसुमी चीर । जड़े भूषण नगन के छबि देखु मन करि थीर । हरित भूमि बिभाग कञ्चन जटित मनिगन हीर ।

हरित द्रुम सघनाबली खग मधुर बोलत कीर ॥ सहचरी-
गन अमित चहुं दिशि गान तान सुधीर । युगल प्रिया सु-
उतरि रथ ते पूजि मानस नीर ॥

❀ उमड़ि घुमड़ि आई बादर कारी ❀

दशरथ नंदन जनकललीजू बैठे सखिन संग महल अटारी ।
कुसुमी बसन युगल तन राजत जगमगात भूषण उजियारी ॥
अलकैं बिथुरि रहीं मुख ऊपर मुकुट चंद्रिका लटक संवारी
चंद्रावती मृदंग टंकोरति चंद्रा तानपूर करतारी ।
चंद्रकलाजू बीन बजावति गावत उमग भरे पिय प्यारी ॥
अधिक प्रवाह बढ्यो सरयू को भरे प्रमोद बिलोकत वारी ।
युगलप्रिया रसिकन के संपति अगम निरखि रति पति बलि-
हारी ॥

❀ झूला ❀

❀ झूलत सीया राजीव नैन ❀

रतन जड़ित हिंडोलना सखि श्याम सुख के ऐन ॥
श्याम अंग पर गौर झलकत दामिनी घन गैन ।
मैथिली रघुबीर शोभा निरखि लज्जित मैन ॥
नाम पिय को लेहु नागरि ज्यों सखिन मन चैन ।
जानकी नहिं लेत मुख सों देत लोचन सैन ॥

परस्पर झुलत झुलावत वदत मधुरे बैन।
अवधपुर नित केलि दम्पती अग्र आनन्द दैन॥

❀ झूलत सीताराम हिंडोरे ❀

श्याम गौर अभिराम मनोहर रति पति के चित चोरे॥
नील पीत वर वसन लसनि तन उड़त सुगन्ध झकोरे।
सहचरी हरषि झुलावति गावति छबि निरखत तृण तोरे॥
मन्द मन्द मुसकात छबीले रमकनि थोरे थोरे।
अति सुकुमारि अग्र की स्वामिनी डरपि गहति पटछोरे॥

❀ रसिक दोऊ झूलत सरयू तीर ❀

रघुनन्दन अरु जनकनन्दिनी श्यामल गौर शरीर॥
राजत छबिमै रतन हिंडोरा तापर बोलत कीर।
गावहिं छबि अवलोकि प्रेम भरि चहुंदिशि सखिनकी भीर
बाजत बीन मुचङ्ग उपङ्ग मृदङ्ग ताल अति धीर।
जुगलप्रिया अति सुख बर्षत जब लेत तान गंभीर॥

❀ किशोरी संग झूलत नवलकिशोर ❀

दशरथनन्दन जनकनन्दिनी सुन्दर श्यामल गौर॥ सरजू तीर सुखद प्रमोदवन विश्व भूमि शिरमौर। तामधि मणि-मय रचित हिंडोरा लसत हेममय डोर॥ चन्द्रकला सखि

हरषि झुलावति विमला ढोरति चौर । जुगलप्रिया यह मधुर केलि लखि सुधि बुधि सब भई भोर ॥

* झूलैं प्यारी झुलावैं प्यारो *

मधुर मधुर कर कंज मंजु गहि रेशम रजु सुकुमारो ॥
नैनन निरखि नवेली विधु मुख मन्द हँसनि नृपवारो ।
उरझि रहे अंग अंग रंग रस सुरझनि अगम निहारो ॥
श्रीयुगल अनन्यअली दोउ नेहिन ऊपर सर्वस वारो ॥

* पिय लागो सावन मास आस यह मेरी *

चलि झूलैं विमल हिंडोर गले भुज गेरी ॥
भये हरित वरन वर भूमि सोहावन लागै ।
फूलैं फलै विपिन प्रमोद मोद मय बागै ॥
गुञ्जत मधुकर करि शोर मोर मन रागै ।
भल समय सुखद अवलोकि निठुर पन त्यागै ॥
शुक चातक कोयल हंस कोकिला टेरी ॥ पिय० ॥
सुनि प्राणप्रिया वर वैन नैन लखि प्यारी ।
गहि अंक रंक ज्यौं सुधन मोद लहि भारी ॥
चलो मेरी जीवन जीव सकल सुख कारी ।

श्रीचन्द्रकलादिक सखी सुसाज सँवारी ॥
आयो सरयू बर तीर घटा घन घेरी ॥ पिय० ॥
विद्रुम नग मनि रचि हेम अनूपम झूला ।
तेहि बैठे सिय महबूब खूब अनुकूला ॥
सखि झुकि झुकि झमकि झुलाय पाय प्रियदूला ।
नभ बिबुध बधू बहु हरषि बरषि रही फूला ॥
सुखकन्द मन्द मुसुकाय सिया तन हेरी ॥ पिय० ॥
पट पीत नील फहराय लपटि अरुझानी ।
सुरझावत सिय पिय विहँसि नही सुरझानी ॥
दोउ नील पीत मिली हरित रंग प्रगटानी ।
सखि गावें हरे हरे गीत हेरि सुख मानी ॥
प्रीतम तमाल तरू प्रीतिलता लपटेरी ।
पिय लागो सावन मास आस यह मेरी ॥ चलि० ॥

❀ झूला झूलो सही मेरे प्राण प्यार से झोंको ना ❀

जब पिय झोंका देत झमकि से डरति प्रिया सुकुमारि लाल तुम रोको ना ॥ जस महराज कुमार कुँवर तुम अधिक लली सुकुमारि लाल झकझोरो ना ॥ श्रीप्रीतिलता अलि रसिक शिरोमणि बसिया सरयू कूल लाल सुख मोरो ना ॥

❀ हेरो हेरो सिया छबि आज पिया सङ्ग झूलि रही ❀

निरखि निरखि सुखकन्द चन्द मुख हरषि सरस सुख पाय अपनपौ भूलि रही ॥ १ ॥ प्रीतम हूँ अवलोकि प्रिया छबि निज मति गति सरसाय महा मुद मूलि लही ॥ २ ॥ श्रीचन्द्रकला श्रीचारुशीलादिक दुहुं दिशि शौक बढ़ाय झमकि झोंका हूलि रही ॥३॥ नव नागरि सिय पिय नव नागर दृगन रही छबि छाय सुप्रीतिलता फूलि रही ॥४॥

❀ पिया धीरे से झुलावो सुकुमारी प्यारी हैं ❀

नव सत साज साजे लखि रति मति लाजे अङ्ग २ छबि भ्राजे सु डरत भारी हैं ॥ १ ॥ बहै त्रिबिध बयारी नभ घटा घन कारी बर बरस फुहारी फहरत सारी हैं ॥ २ ॥ सिया स्वामिनी जू मोरी प्यारे देखो गहे डोरी सखि कहत निहोरी निठुराई धारी हैं ॥ ३ ॥ सुनि जानकीसुबर पिया पांयन सुपरि प्रीतिलता फूल करि तन मन वारी हैं ॥ ४ ॥

❀ झूलैं नवल हिंडोले पिय प्यारी संग वनिठान श्यामा ❀

रतन जड़ित अति रुचिर हिंडोला तामें रचना अनेक द्रुम सावन के कुंज बीच, बाजत मृदंग आदि गावत सखी समूह कोटि काम रति बामा ॥ १ ॥ शीतल सुगन्ध मन्द वायु के

प्रसंग तहाँ घेरि घेरि आवत वलाहक के वृन्द, नान्हीं २ बुन्दियन वरषन की समय छवि अति शोभित सीयरामा ॥ २ ॥ शीश को नवाय ईश को मनाय कै मुनीश बारबार विनय करत कर जोरि जोरि, नृपतिकिशोर औ किशोरीजू आनन्द रहैं यह हमार मनकामा ॥ ३ ॥

❀ झुलत सिया पिया महल अटारी ❀

नव रंग मणि मय बंगला सुन्दर सुन्दर मोतिन झब्बा झालर, रतन जड़ित अति ललित हिंडोरा रतन रचित चहुंदिशि फुलवारी ॥ १ ॥ मधुर २ गरजत घन बरषत चम चम चम चम चपला चमकत, सुनि २ बोलत मोर मोरी सुख, वचन कहति सखी प्रीतमप्यारी ॥२॥ झुकि २ झुमि झुलाबत गावत पिय प्यारी हिय मोद बढ़ावत, तान लेत नई २ अलबेली चलत पवन मृदु अति सुखकारी ॥३ अति नव नेह भरे दोउ रसिया दिय गलबांहि करत रस बतियां, सरसत सुख उमगत उर अलियां तन मन छवि छकि रही न संभारी ॥ ४ ॥ श्रीप्रेमअली लषि तन मन वारति हुलसी २ हिय विधि से मनावति, सावन सुख सरसावन सब दिन निरखत रहौं छवि युगलविहारी ॥५॥

❀ जय रहे अवधेश ललन मिथिलेशलली की जय रहे ❀

पिया साँवरो सोहैं घटा सीय दामिनी सी छा रही।

बातैं मधुररस रहस के आनन्द जल बरसा रहे ॥
अंतरंग भरे झूलैं दोऊ दोउ ओर सखी झुलावहीं ।
झोंका सरस झूकि झूमि २ भूषण झमाझम बज रहे ॥
चहुं ओरसे नागरि खड़ी बाजे सुमधुर बजावहीं ।
कोई तान लेत तरंग सी चातकि मयूरि सी होय रहीं ॥
तिरछी नजर हँसि हेरि हेरि फूल गेंदकी चोटैं चलें ।
श्रीप्रेमअली यह चाहती नित नयन में छाये रहें ॥

❀ सब तजि होइहौं महल उपासी ❀

स्वर्ग मुक्ति वैकुण्ठ विसारौं होय गुरु पद की दासी ।
सद्गुरू वचन महारस मानौं परौं न भ्रम की फांसी ॥
सेज विहार रास रस लूटौं त्यागि वियोग उदासी ।
युगलविहार भावना करिहौं भटकौं न तीरथ काशी ॥
और ठौर उझकौं नहिं नयनन राम सिया छवि प्यासी ।
गुरु प्रसाद भई रसिक आप अब नाहिन बटु सन्यासी ॥
भाव कुभाव धरे कोइ मनमें कोइ करै उपहासी ।
लोक लाज कुल मान बड़ाई आश त्रास सब नाशी ॥
कृपानिवास कृपा करी सीयजू करिहौं युगल खवासी ।

❀ करि सोरहो शृङ्गार पिया घर जाना हीं होगा ❀

रीत बिछुआ
कटि बिछिया प्रेमा सुमहावर चमकत प्रभा अपार ।

धृत सनेह तदीय सुनूपुर मधु मदीय मदकार ॥ १ ॥
उरुपर साटी सोइ धारो कर मनसिज उदगार ।
मान किंकिनी कटि में सोहै प्रणय उरस्थल हार ॥२॥
कुच पर राग अनुराग कण्ठमणि महाभाव नथ प्यार ।
रूढ़ सिन्दूर अधिरूढ़ सु कज्जल सौभागिनी शुभकार॥३
मोहन मोदन कर्णफूल धरू जो सोहाग विस्तार।
शीशफूल मादन मनमथ सम शीश उपर सुठिधार ॥४
यामें नित्य विलास सहस्रधा केलि अपरम्पार ।
रति स्थायी की यह सीमा प्रवल अमित रसदार ॥५॥
यहि विधि करि शृङ्गार मनोहर प्रीतम मनबसकार।
व्यक्त यौवना तूं अति सुन्दर गर्वीली गतिधार ॥ ६ ॥
रमकि झमकि के पियसंग मिलि के देहिं सुरति सुखसार ।
तब तूं सौभागिनी होय पियके ह्वै जैहो गलेहार ॥७॥
तूं वे वे तूं ऐक्य होयके फिर नहिं द्वैत प्रचार।
यथा अम्बुनिधि मिलि के सरिता द्वै नहिं एकाकार ॥८
शिव शुकसनक शेष श्रुति हनुमत औ मुनिरसिक उदार ।
यह उपासना रस समुद्र में मज्जत सांझ सकार ॥ ९ ॥
बिनु निर्हेतुकी कृपा सीय की यामें नहिं अधिकार ।
यह रसमोद बिना रसवेत्ता जानत नाहिं गँवार ॥१०॥

शुद्धि-पत्र

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
१	१२	सामाज्य	साम्राज्य
४	१५	अपत्वात्	अग्रत्वात्
४	१८	ग्रन्थादा	ग्रन्थादौ
६	१४	भाई	माई
७	१८	रुपत्व	रूपता
८	१२	स्पस्ट	स्पष्ट
१०	२	अनुभवादि	अनुभावादि
१०	१०	केलिको	केलिका
११	१४	कोडति	क्रीडति
१३	१३	परिमिति	परिमित
१३	१८	भयदि	भयादि
२३	३	पूरण	पूर्ण
२५	१०	जसे	जैसे
२६	८	रघुन्दने	रघुनन्दने
२६	१७	दाभ	दाम
२८	१३	विरह विरह चड़ी	विरह चढ़ी
२९	८	त्रिला	त्रिताली
२९	१२	दासरथे	दाशरथे
२९	१४	दाशरथ	दाशरथे
३१	१९	वंशविनश	वंशविनाश

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
३३	१३	देम	देवम्
३४	४	ये नतं	येन तं
४०	४	स्थैर्यो	स्थैर्ये
४१	८	भिरसा	भिरसौ
४६	२	क्रिमुच	किमुवाच
४७	१	अ ा ातयामा	अजातयामा
५०	१३	का	को
५१	५	श्लोमें	श्लोक में
५३	१३	को	का
६१	७	प्रगट	प्रकट
६१	१३	श्रीप्राणवल्लभजू	श्री प्राणवल्लभाजू
६१	१७	०मानकार	मान कर
६४	६	स	इस
६५	१४	शंक्या	शंक्याह
६५		गृादि	गृहादि
६६	८	अथत्वभीष्ट	अथ त्वदभीष्ट
६७	५	वामदेवाभि	वामदेवादिभि
६८	६	बहुत्यकृत्व: प्रवोधमानो	बहुकृत्व:प्रवोध्यमानो
६८	१४	मनत्वादी	मनस्त्वादी
६८	१५	खिन्नह	खिन्नाह
६८	१८	क	को
६६	१६	वतलाना	वतलाता
७१	७	भावार्य	भावार्थ

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
७२	१२	भूपणानि	भूषणानि
७४	१२	कुण्डलांदोलन	कुण्डलान्दोलन
८१	१०	योद्धतया	योद्धृतया
८१	१३	ऽभ्यज्जितम्	ऽभ्यञ्जितम्
८१	१५	सच	साच
८५	१३	तन्माश्रायत	तन्मात्रायत्त
९४	३	का	की
९९	२०	दन्दुरेखा	दिन्दुरेखा
१०४	१	तड़िदपतिपीता	तड़िदतिपीता
१०४	१७	पीतमा	पीतिमा
१०५	१	पृथिव	पृथिवी
११०	१५	करग्म:	करयुग्म:
११०	१९	उपमिति	उपमित
११४	१	कर	करें
११६	१७	श्रीति	श्रीरिति
११६	१८	विश्रृष्टा	विसृष्टा
११९	८	पमिति	पमित
१२१	३	दम्पता	दम्पती
१३०	४	सुचीनां	शुचीनां
१३१	३	नूपूर	नूपुर
१३१	७	येन	यस्य
१३५	४	भोजयमासु	भोजयामासु

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
१३७	१८	श्रीपाण	श्रीप्राण
१४०	१२	सन्तिधानात्	सन्निधानात्
१४१	१७	विष	विषय
१४१	१७	शलक	श्लोक
१५४	२	किशोरी	किशोर
१५८	७	सौगन्ध	सौगन्ध्य
१५८		श्लोक से	श्लोक से कहते हैं
१६१	६	हुए	हुए श्रीप्रियतमजू
१६१	१८	सीतस्पर्शा	सीतास्पर्शा
१७१	८	दवता	देवता
१७१	६	विंमलं	बिमलं
१७३	४	सभापयं	समापयं
१७३	११	स्तन्द्रुपं	स्तद्रूपं
१७३	१८	सवं	सर्वं
१७५	१४	कया है	किया है
१७५	१५	हैं	है
१७६	१	तरङ्गें	तरङ्गें
१७६	१४	भाषाटीकयां	भाषाटीकायां
१७६	१४	समप्तः	समाप्तः

* सिद्धान्त *

विद्याविभूषणयुतो हरिरञ्जनाभ-
पादारविन्दमधुपो यदिदं व्यधत्त ।
श्रीजानकीचरितगीतमुदग्रभावा-
स्तत्साधवः प्रतिदिनं मुदिताः पिवन्तु ॥

(श्रीजानकी गीत)

श्रीसरयूतट बीच वास सजिये तजिये जग ।
याही में कुशलात मोद मंगल अनुपम मग ॥
श्रीसीतावर स्वच्छ सुयश गाइये एकरस ।
श्रीयुगलानन्य प्रयास विना दम्पति कीजिये वस ॥

(श्रीयुगलविनोद विलास)

प्रो०—एस० पी० एस० श्रीहनुमत् प्रेस, श्रीअयोध्याजी ।